Chapter - 2

https://parikshasolutions.blogspot.com

PAGE NO.

इस अध्याय में तीन प्रकार के वर्गीकरणों की चर्चा की गई है।
प्राथमिक / द्वितीयक / तृतीयक
संगठित / असंगठित
सार्वजनिक / निजी

प्राथमिक क्षेत्रक —
(i) जब हम प्राकृतिक संसाधनो का उपयोग करके किसी वस्तु का उत्पादन करते है, तो इस प्राथमिक क्षेत्रक की गतिविधि कहा जाता है।
(ii) उदा० — कृषि, मत्स्य पालन, पशुपालन आदि
(iii) इसे कृषि एवं सहायक क्षेत्रक भी कहा जाता है।

द्वितीय क्षेत्रक —
(i) इसके अंतर्गत प्राकृतिक उत्पादो को विनिर्माण प्रणाली से उपयोग लायक बनाया जाता है। द्वितीय क्षेत्रक कहलाता है।
(ii) जैसे - गन्ने से शक्कर, कपास से कपड़ा बनाना।
(iii) यह प्राथमिक क्षेत्रक के बाद अगला कदम है।
(iv) यह क्षेत्रक उद्योगों से जुड़ा हुआ है इसलिए इसे औद्योगिक क्षेत्रक भी कहा जाता है।

www.notesdrive.com

https://parikshasolutions.blogspot.com

तृतीयक क्षेत्रक —
(i) यह क्षेत्रक किसी वस्तु का उत्पादन नहीं करती है।
(ii) ये क्षेत्रक प्राथमिक व द्वितीयक क्षेत्रक के विकास में मदद करती है।
(iii) इसे सेवा क्षेत्रक भी कहते हैं।
(iv) जैसे — वकील, डॉक्टर, शिक्षक, परिवहन सेवाएँ आदि।

आर्थिक गतिविधियों के उदाहरण

प्राथमिक क्षेत्रक — (i) मधुआरा (ii) माझी
(iii) फूलों की खेती करने वाला
(iv) दूध-विक्रेता

द्वितीयक क्षेत्रक — (i) दर्जी (ii) टोकरी बुनकर
(iii) चीनी मिल/कारखाना में श्रमिक

तृतीयक क्षेत्रक — (i) पुजारी (ii) मधुजन
(iii) कूरियर पहुँचाने वाला

सकल घरेलु उत्पाद से क्या तात्पर्य है?
Ans- एक लेखांकन वर्ष में ~~प्रत्येक~~ तीनों क्षेत्रकों ~~के~~ के उत्पादनों के योगफल को देश का सकल घरेलु उत्पाद (स. घ. उ.) कहते हैं।
भारत में स. घ. उ. मापन जैसा जटिल कार्य केन्द्र सरकार के मंत्रालय द्वारा किया जाता है।

www.notesdrive.com

https://parikshasolutions.blogspot.com

भारत में तृतीयक क्षेत्रक इतना अधिक महत्वपूर्ण क्यों हो गया है? बताइए। अथवा भारत में तृतीयक क्षेत्रक इतनी तेजी से क्यों बढ़ रहा है। बताइए।

Ans- (i) विकास के लिए आवश्यक — किसी देश में अनेक सेवाएँ जैसे - अस्पताल, सड़क, बाँध, डाक एवं तार सेवा, थाना, नगर निगम, परिवहन बैंक बीमा कम्पनी इत्यादि की आवश्यकता होती है। यह सब तृतीयक क्षेत्रक से जुड़ा है इसलिए तृतीयक क्षेत्रक में भारी वृद्धि हुई है।

(ii) परिवहन तथा संचार के साधनों का विकास — प्राथमिक और द्वितीयक क्षेत्रक में जितनी वृद्धि होगी उतनी वृद्धि तृतीयक क्षेत्रक में भी होगी। क्योंकि जो उत्पाद उसमें उत्पादित होता है उसे यातायात, व्यापार, भंडार आदि की जरूरत पड़ती है जो तृतीयक क्षेत्रक से जुड़ा है।

(iii) अधिक आय अधिक सेवाएँ — हमारे देश में प्रतिव्यक्ति आय बढ़ रही है जैसे - जैसे आय बढ़ती है वो लोग पर्यटन, शॉपिंग, स्कूल, बैंकों आदि की माँग भी बढ़ने लगती है।

www.notesdrive.com

https://parikshasolutions.blogspot.com

(iv) नई सेवाएँ — विगत कुछ दशकों में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी ने बहुत ज्यादा विकास किया, जो भी तृतीयक क्षेत्र से संबंधित है।

पुस्तक में वर्णित उदा० से भिन्न उदा० के आधार पर प्राथमिक द्वितीयक एवं तृतीय क्षेत्रकों के अंतर की व्याख्या करें। अथवा
प्राथमिक द्वितीयक व तृतीय क्षेत्रक में अंतर

प्राथमिक क्षेत्रक —
(i) इसमें प्राकृतिक संसाधनों से ज्ञात वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है।
(ii) इस क्षेत्रक को कृषि एवं सहायक क्षेत्रक भी कहते हैं।
(iii) यह क्षेत्रक असंगठित होता है और पारम्परिक तकनीकों का प्रयोग करता है।
(iv) उदा० - कृषि, डेयरी, मत्स्य पालन

द्वितीयक क्षेत्रक —
(i) यह क्षेत्रक एक वस्तु का रूप बदलकर उसकी उपयोगिता बढ़ा देता है।
(ii) इस क्षेत्रक को औद्योगिक क्षेत्रक भी कहते हैं।
(iii) यह क्षेत्रक संगठित क्षेत्रक होता है और पारम्परिक बेहतर तकनीकों का प्रयोग करता है।
(iv) उदा० - गन्ने से शक्कर, कपास से कपड़ा, लकड़ी से फर्नीचर

www.notesdrive.com

https://parikshasolutions.blogspot.com

तृतीयक क्षेत्रक —

(i) यह क्षेत्रक प्राथमिक व द्वितीयक क्षेत्रक को सेवाएँ प्रदान करता है।

(ii) इस क्षेत्रक को सेवा क्षेत्रक कहते है।

(iii) यह क्षेत्रक संगठित क्षेत्रक होता है और बेहतर तकनीकों का प्रयोग करता है।

(iv) उदा० — परिवहन, संचार, भण्डारण.

आपके विचार से म. गाँ. रा. ग्रा. रो. गा. अ. को काम का अधिकार क्यो कहा गया है।

Ans- भारत सरकार ने हाल ही में 625 जिलो में कार्य करने का अधिकार से संबंधित कानून बनाया है। इस कानून को राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार आश्वासन अधिनियम 2005 (म. गाँ. रा. ग्रा. रो. गा. अ.) कहते है। इसके अंतर्गत वे उन लोगों को जो कार्य करने में सक्षम है। जिन्हें काम की जरूरत है व सरकार द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में 100 दिन के रोजगार की गारंटी दी है इसलिए (म. गाँ. रा. ग्रा. रो. गा. अ.) 2005 को काम अधिकार कहा गया है।

शहरी क्षेत्रो में रोजगार में वृद्धि कैसे की जा सकती है।

शहरी क्षेत्रो में रोजगार में वृद्धि आधार उद्योगों में बड़ी संख्या में निवेश करके शैक्षिक प्रणाली को बदलकर, परिवहन एवं संचार के साधनों का विकास करके की जा सकती है।

www.notesdrive.com

https://parikshasolutions.blogspot.com

संगठित क्षेत्रक व असंगठित क्षेत्रक में अंतर —

संगठित क्षेत्रक —

(i) ये क्षेत्रक सरकार द्वारा पंजीकृत होते है।
(ii) रोजगार की सुरक्षा प्राप्त होती है।
(iii) रोजगार की अवधि नियमित होती है।
(iv) इसमें कार्य नियमित होता है तथा श्रमिकों को बिना किसी कारण काम से नही निकाला जा सकता है।
(v) इन क्षेत्रक के लोग मासिक वेतन प्राप्त करते है।

असंगठित क्षेत्रक —

(i) ये क्षेत्रक सरकार द्वारा पंजीकृत नही होते है।
(ii) रोजगार की सुरक्षा प्राप्त नही होती है।
(iii) रोजगार की अवधि नियमित नही होती है।
(iv) इसमें कार्य नियमित नही होता है तथा श्रमिकों को बिना किसी कारण काम से निकाला जा सकता है।
(v) इन क्षेत्रक के लोगो को दैनिक वेतन प्राप्त होती है।

www.notesdrive.com

https://parikshasolutions.blogspot.com

भारत में सेवा क्षेत्रक दो विभिन्न प्रकार के लोग नियोजित करता है। ये लोग कौन हैं?

Ans- (i) शिक्षित एवं कुशल लोग —
जैसे - डॉक्टर, इंजीनियर, शिक्षक, सैन्यकर्मी, पुलिस आदि।

(ii) अशिक्षित एवं अकुशल लोग —
जैसे — धोबी, नाई, मोची आदि।

अर्थव्यवस्था में गतिविधियाँ रोजगार की परिस्थितियों के आधार पर कैसे वर्गीकृत की जाती है।

Ans- रोजगार की परिस्थितियों के आधार पर दो क्षेत्रकों अर्थात संगठित एवं असंगठित क्षेत्रकों के रूप में वर्गीकृत की जाती है।

संगठित क्षेत्रक —

www.notesdrive.com

https://parikshasolutions.blogspot.com

सार्वजनिक क्षेत्रक तथा निजी क्षेत्रक में अंतर बताइए।

सार्वजनिक क्षेत्रक -> ① इसका नियंत्रण तथा प्रबंधन सरकार द्वारा होता है।
② इस क्षेत्र का मुख्य उद्देश्य जन कल्याण होता है।
③ यह क्षेत्रक लोगों को शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, सुरक्षा आदि मूलभूत सुविधाएँ मुफ्त प्रदान करता है।
④ उदाहरण -> भारतीय रेलवे, डाकघर आदि।

निजी क्षेत्रक -> ① इसका नियंत्रण तथा प्रबंधन व्यक्ति या कंपनी के हाथों में होता है।
② इसका मुख्य उद्देश्य अधिकतम लाभ कमाना होता है।
③ यह मुख्य क्षेत्रक लोगों को उपभोक्ता वस्तुएँ प्रदान करते हैं।
④ उदाहरण -> रिलायंस, टी.सी.एस. आदि।

प्र० व्याख्या कीजिए कि एक देश के आर्थिक में सार्वजनिक कैसे योगदान करता है।

उ० सार्वजनिक क्षेत्रक की अधिकतर क्रियाएँ लोगों के कल्याण के लिए की जाती हैं सड़कों, पुलों रेलवे आदि का निर्माण, बिजली सृजन एवं बाँधों का निर्माण आदि सार्वजनिक क्षेत्रक की महत्वपूर्ण क्रियाएँ हैं। इन क्रियाओं के बिना किसी भी देश का आर्थिक विकास असंभव है।

www.notesdrive.com

https://parikshasolutions.blogspot.com

खुली बेरोजगारी और प्रच्छन्न बेरोजगारी के बीच अंतर →

खुली बेरोजगारी —

(i) खुली बेरोजगारी वह स्थिति है जिसके अंतर्गत योग्य लोग मजदूरी की वर्तमान दरों पर कार्य करना चाहते हैं परन्तु कार्य प्राप्त नहीं कर पाते हैं।

(ii) यह स्थायी प्रकृति की होती है।

(iii) यह किसी भी जगह पायी जा सकती है।

प्रच्छन्न बेरोजगारी —

(i) जब लोग कार्य में लगे हुए प्रतीत होते हैं परन्तु वास्तव में बेरोजगार होते हैं अर्थात इसमें किसी काम में आवश्यकता से अधिक संख्या में लोग लगे होते हैं।

(ii) यह अस्थायी प्रकृति की होती है।

(iii) यह कृषि में, छोटी-मोटी दुकानों एवं छोटे व्यवसायों में लगे ~~परिवारों~~ परिवारों में पाई जाती है।

मनरेगा 2005 के उद्देश्यों की व्याख्या कीजिए

अथवा

महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम 2005 के उद्देश्यों को ~~बता~~ बतलाइए।

अथवा

रा.ग्रा.रो.गा.अ. 2005 के उद्देश्यों की व्याख्या कीजिए।

www.notesdrive.com

https://parikshasolutions.blogspot.com

Ans- केन्द्र सरकार ने भारत के 200 जिलो में काम का अधिकार लागू करने के लिए एक कानून बनाया है। इसे महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार अधिनियम 2005 कहते है।

उद्देश्य - (i) उन सभी लोगों को जो काम करने में सक्षम है और जिन्हे काम की जरूरत है, को सरकार द्वारा वर्ष में 100 दिन के रोजगार की गारंटी दी गई है।

(ii) यदि सरकार रोजगार उपलब्ध कराने में असफल रहती है तो वह लोगो को बेरोजगारी भत्ता देगी।

(iii) इस अधिनियम में उन कामों को ~~वरीयता~~ वरीयता दी जाएगी, जिनसे भविष्य में भूमि से उत्पादन बढ़ाने में मदद मिलेगी।

सार्वजनिक क्षेत्रक की गतिविधियों के कुछ उदाहरण दीजिए और व्याख्या कीजिए कि सरकार द्वारा इन गतिविधियों का कार्यान्वयन क्यों किया जाता है।

Ans- सार्वजनिक क्षेत्रक की गतिविधियों के उदाहरण निम्न है -

(i) सड़कों एवं पुलों का निर्माण।
(ii) रेलवे का निर्माण।
(iii) बिजली सृजन।
(iv) बाँधो का निर्माण एवं नहरो की व्यवस्था करना

www.notesdrive.com

https://parikshasolutions.blogspot.com

इन गतिविधियों का कार्यान्वयन सरकार द्वारा इसलिए किया जाता है, क्योंकि इन कार्यों में बहुत अधिक मात्रा में पूंजी की आवश्यकता होती है तथा इन कार्यों में प्राप्त होने वाला लाभ, अप्रत्यक्ष तौर पर बहुत सारे लोगों को होता है परन्तु प्रत्यक्ष लाभ, बहुत धीरे-धीरे प्राप्त होता है, जो अनेको बार खर्चों से बहुत कम होता है।

असंगठित क्षेत्रक के श्रमिकों को निम्नलिखित मुद्दों पर ~~संरक्षण~~ संरक्षण की आवश्यकता है — मजदूरी, सुरक्षा और स्वास्थ्य। उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।

Ans — ~~असंगठित~~ असंगठित क्षेत्रक में श्रमिकों को मजदूरी पर संरक्षण की आवश्यकता है, क्योंकि उन्हें उनके कठिन परिश्रम के बदले कम भुगतान किया जाता है। श्रमिकों की नौकरी की एवं स्वयं की सुरक्षा भी होनी चाहिए, क्योंकि उन्हें उनके नियोक्ता द्वारा किसी भी समय बिना किसी कारण के कार्य से निकाला जा सकता है एवं उन्हें अनेक खतरनाक स्थितियों में भी कई बार काम करना पड़ता है जैसे - ईंट, खदान, पटाखे ~~नि~~ निर्माण आदि स्थानों पर जहाँ दुर्घटना की संभावना अधिक रहती है। स्वास्थ्य सुविधाएँ श्रमिकों को उचित रूप से उपलब्ध होनी चाहिए, ताकि श्रमिक कुशलता से कार्य कर सकें।

www.notesdrive.com